पृथ्वी के लिए मेरा योगदान

।। हमारी पृथ्वी, हमारा जीवन ।।

अगर नैतिकता का अभाव हो जाय तब भी स्वार्थ के वशीभूत होते हुए भी ,संसाधनो का पूर्ण दोहन करते हुए भी ,हम कभी तो विचार करना ही होगा की हम अपनी पृथ्वी के साथ क्या कर रहे है। और यह तब न पता चले, जब जीवन ही संकट मे आ जाय और हम सभी को पछतावे के सिवाय कुछ न बचे ।

इसलिए समय रहते हमे इस पर विचार करना ही होगा अपनी सीमा तय करनी ही होगी की हम अपनी पृथ्वी के संसाधनो का दोहन किस सीमा तक करे ।

यही सोच पृथ्वी के विनाश को बचा सकती है , हम लेने की भावना का साथ देने की भावना को कब अधिगृहित करेंगे यह सोचना होगा ।

प्रकृति अपने नियमानुसार कार्य तो करेगी ही पर उसकी कितनी कीमत हम मानव सभ्यता को चुकानी पड़ेगी यह किसी को नही पता ।।

यह संतुलित हो तथा सहने योग्य हो इसके लिए हमे त्वरित कदम उठाने पड़ेगे-

1:- मनुष्य का मन बहुत महत्वाकांक्षी होता है , इसमे संतुष्टी का भाव लाना होगा । जहा तक संभव हो आधुनिक मशीनो ,संसाधनो के प्रयोग से बचे।

1. जैसे -यदि हमे पास के बाजार से सब्जी लानी है तो ,पैदल जाकर भी सब्जी ली जा सकती है , साधनों का दुरप्रयोग न करें ।
2. प्लास्टिक का प्रयोग बिल्कुल न करे । इसके बिना भी जीवन संभव है , प्लास्टिक के वैकल्पिक स्रोतों के अनुसंधान व प्रयोग पर बल देना चाहिए ।।
3. जितना भी संभव है ,पौधे लगाये ,और आस पास लगे है तो उन्हे संरक्षित करे । तथा अन्य लोगों को प्रेरित करे । 5-10 साल के लिए पौधो को गोद लेने की परम्परा का विकास करे ।
4. यदि संभव हो तो उच्च आवृत्ति की ध्वनी को न सुने, न बजाये।।

इसका लिए यदि सामाजिक ढांचे मे परिवर्तन भी करना हो तो करे ।।

5. बिजली का प्रयोग आवश्यकता होने पर ही करे । उसकी बचत करे , उपयोग करने के बाद स्विच बन्द करना न भूले ।
6. प्रकृति की गोद मे बैठने तथा कार्यों को करने का अभ्यास करे जो पहले हम करते थे पर शायद आधुनिकता और दिखावे के आडम्बर ने हमे प्रकृति से दूर कर दिया है।
7. अपने बुजुर्गों का सम्मान करे तथा उनके साथ समय बिताये और उनके अनुभवों का लाभ ले ।
8. सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करे, छोटी- छोटी खुशियो को भरपूर मनाये ।
9. बच्चो के साथ समय बिताये उनमें देशभक्ति की भावना का विकास करे, नैतिकता का पाठ पढ़ाते हुए संस्कारवान बनाने का प्रयास करे ।।
10. अपनी मिट्टी से प्रेम करे तथा उसे सुरक्षित रखने का पूरा प्रयास करें ।
11. अपने पंच महाभूत (क्षिति , जल, पावक, गगन, समीर) को स्वच्छ और पुष्ट रखने का भरपूर प्रयास करे ।
12. प्रकृति और उनकी कृतियों से प्रेम करे ।।
13. यदि हम किसानो को प्रति वृक्ष संरक्षण व संवर्धन तथा वृक्षारोपण हेतु कुछ आर्थिक सहयोग करे तो वह अपने खेत खलिहान मेड़ पर पौधो को लगाकर संरक्षित कर सकता है ।
14. ऐसे वस्तुओ का उपयोग किया जाय जो रिसाइकिल और रियूज हो सके।

Last modified: 11:29 pm